बुनियादी

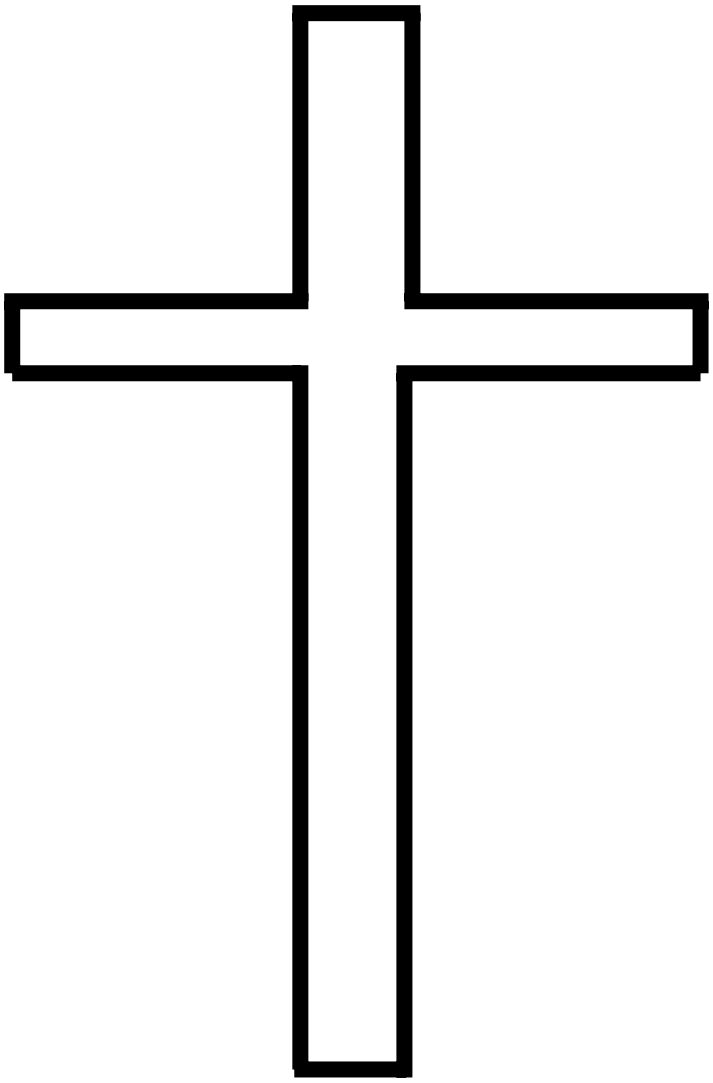

शियत्व

मूलभूत चेलापन / शिष्यत्व
प्रस्तावना

परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिये एक अद्‌भुत् प्रयोजन है। आपके और हर एक व्यक्ति के जीवन में सफलता इस बात से निश्चित होगी , जब आप / वे परमेश्वर के उद्‌देश्य को परिपूर्ण करते हैं या नहीं। परमेश्वर के उद्‌देश्य को ढूँढ कर उसे पूरा करने के लिये हमें यह जानना आवश्यक है कि यीशु के लिये हर दिन कैसे जियें।

प्रथम तीन पाठ के तीन हिस्से हैं :
१) पवित्र शास्त्र का अध्ययन,
२) मूळभूत प्रश्न,
और (३) पवित्र शास्त्र को स्मरण / कंठस्थ करना

पवित्र शास्त्र का अध्ययन आप को परमेश्वर के वचन की सच्चाई सिखायेगा। मूळभूत प्रश्न आपको इस सत्य को अपने जीवन में लागू करना सिखायेंगे। पवित्र शास्त्र का स्मरण करने से आप इस सच्चाई को अपने हृदय में छुपा पायेंगे।

इस अध्ययन में आप, अपने पीछे चलनेवालों को यीशु ने दिये हुए दूत—कर्म के बारे में जानेंगे, उसे कैसे किया जाता है और उसे करने के लिये अपने आपको तैयार कैसे किया जाता है। (यह भी सीखेंगे)।

हर एक पाठ को प्रार्थना के साथ शुरू कीजिये। उत्तरों को अपने ही शब्दों में लिखिये। आप जो सीख रहे हैं उसे अपने जीवन में उतारने के लिये परमेश्वर की सहायता माँगे। प्रभु के वचन का अध्ययन करने पर प्रभु आपको आशिषित करे।

बुनियादी शिष्यत्व
पाठ—१
हमारा मिशन

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं, उस आधार पर आप नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें।

१. यीशू मसीह ने हमें क्या करने के लिए बुलाया है ? मत्ती २८:१९—२०

२. शिष्य क्या है ? प्रेरितों के काम ११:२६

३. एक व्यक्ति शिष्य कैसे बनता है ? रोमियो १०:९—१०, लूका १४:२६—२७,३३

४. एक व्यक्ति शिष्य बनकर कैसे जीता है? लूका ९:२३, रोमियो १२:१—२

५. शिष्य को प्रतिदिन क्या करना चाहिए ताकि उसका संबंध परमेश्वर के साथ बना रहे ? लूका ४:४, मत्ती २६:४१

६. एक शिष्य को किस प्रकार जीना चाहिए ताकि वह लोगों के लिए गवाह ठहरे ? यूहन्ना १३:३५, मत्ती ५:१६

७. जिस प्रकार शिष्य प्रभु में बढ़ते हैं उन्हें किन तीन चरणों से गुजरना होता है और हर चरण में क्या होता है ? १ यूहन्ना २:१२—१४

चरण	**क्या होता हैं**
क:	
ख:	
ग:	

८. परमेश्वर के बच्चों के जीवन से किन दृढ़गढ़ों को हटाना जरूरी है, और उनका प्रतिस्थापन किन बातों से होना चाहिए ? इफिसियों ४:१७—५:७

हटाना	**प्रतिस्थापन करना**

९. जैसे हम आत्मिक रूप से बढ़ते हैं परमेश्वर हमें किस प्रकार की मानसिकता देना चाहता है ? फिलिप्पियों २:५—८

१०. शिष्यों को क्या सीखना चाहिए जिस प्रकार वे आत्मिक प्रौढ़ता में बढ़ते हैं? २ तीमुथियुस १:९, इकिसियों ५:१७

आधारभूत प्रश्न : जो आपने अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में मदद करना ।

१. क्या आप ऐसा महसूस करते है कि आपको शिष्य बनने के लिए बुलाया गया है जो परमेश्वर के साथ हर दिन संगति करता हो और यीशू मसीह के लिए जीता हो ? हाँ... नहीं ..... यदि नहीं, तो इसी क्षण प्रार्थना करें और परमेश्वर से माँगे कि इस सच को आपके लिए वास्तविक बनाएँ।

२. क्या आप महसूस करते हैं कि सब सेवकाई का मुख्य उद्देश्य शिष्य बनाना हैं ? हाँ... नहीं ..... यदि नहीं, तो परमेश्वर से माँगे कि इस सच को इसी क्षण प्रकाशित करें और आज से इस में चलना शुरू करें।

३. कया आप महसूस करते हैं कि शिष्य बनना ही सही आत्मिक बढ़ोत्री को उत्पन्न करता है और आपके जीवन में उद्देश्यों को पूरा करता है ? हाँ... नहीं ..... यदि नहीं, तो परमेश्वर से माँगे कि वह इस सच को आज के दिन आपके लिए वास्तविक बना दे।

४. क्या आप महसूस करते हैं कि शिष्य बनना और शिष्य बनाने के दृढ़गदों को तोड़ना और कमज़ोरियों पर विजय पाना शामिल हैं ? हाँ... नहीं ..... यदि नहीं, तो इसी क्षण प्रार्थना करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको मदद करे।

५. क्या आप शिष्य हैं ? हाँ... नहीं ..... यदि नहीं, तो इसी क्षण प्रार्थना करें कि परमेश्वर ऐसा बनने की इच्छा दें । परमेश्वर के साथ संगति करना शुरू करें और यीशु मसीह के लिए प्रतिदिन जिएँ।

स्मरण करें : मत्ती २८:१८—२० को स्मरण करके परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में छुपाएँ।

बुनियादी शिष्यत्व
पाठ—२
किस तरह शिष्य बनाएँ

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं, उस आधार पर आप नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें।

१. परमेश्वर किन दो बातों का उपयोग करता है हमे बचाने के लिये, और हमें किस प्रकार मदद करता है कि हम यीशु मसीह के लिए जिएँ ? रोमियों १०:१७, यूहन्न १६:७—११,१३

२. जब हम शिष्य बनाते है और गवाही देने की कोशिश करते है तो हमारा प्रतिरोध कौन करता है ? इफिसियों ६:१२

३. शैतानी ताकतों पर विजय पाने और शिष्य बनाने के लिए हमें क्या उपयोग करना चाहिए ? २ कुरि १०:४—५, इफिसियों ६:१३—१८

४. हमे वचन के साथ क्या करना चाहिए ताकि हम शिष्य बनाएँ और हम यह जब करते हैं तो हमारी मनसा क्या होनी चाहिए ? २ तीमुथियुस ३:१६, ४:२

५. हमें किस प्रकार प्रार्थना करना चाहिए ताकि हम शिष्य बनाएँ ?
   १. तीमुथियुस २:१—४, फिलिप्पियों ४:६, याकूब ५:१६

६. हमें शिष्यों को क्या करने के लिए उत्साहित करना चाहिए ताकि उनमें मसीह का मन विकसित हो और उनके जीवनों में उसका उद्देश्य पूरा हो? पतरस १:५—११

७. जीवन की समस्याओं के विषय में आप शिष्य को क्या शिक्षा दे सकते हैं, और उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ? १ पतरस १:६—७, रोमियों ५:३—५

८. यदि एक व्यक्ति को सही प्रकार से शिष्य बनाया तो उसे क्या करने की क्षमता होनी चाहिए ? फिलिप्पियों २:१२—१३

आधारभूत प्रश्न : जो आपने अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में मदद करने के लिए ।

१. क्या आप पवित्र आत्मा और वचन पर निर्भर हैं, आपके स्वयं के क्षमताओं के बावजूद, जब आप दूसरों की सेवकाई करते हैं ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो परमेश्वर से इसी क्षण माँगे कि आपको उसके वचन और पवित्र आत्मा पर निर्भर बनाएँ जब आप सेवकाई करते हों।

२. क्या आप शैतानी ताकतों को पहचानते हैं जब आप सेवकाई में उनके साथ व्यवहार करते हैं ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो परमेश्वर से इसी क्षण समझ की आत्मा को मांगे ताकि शैतानी ताकतों को पहचान सकें।

३. क्या आप आत्मिक शस्त्र के हर भाग को सामर्थी बनाते हैं ताकि आप शैतानी विरोधियों के साथ व्यवहार कर सकें ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो परमेश्वर को खोजें ताकि वह आपके कमज़ोर क्षेत्रों को इसी क्षण सामर्थी बना सके।

४. क्या आप दुसरों को उनके कमज़ोर क्षत्रों को पहचानने और उन्हे सामर्थी बनाने में मदद करते हैं ताकि वे शैतान पर विजय पा सकें ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

५. क्या आप वचन का उपयोग सौम्यतापूर्वक करते हैं, जब आप दूसरों की सेवकाई करते हैं ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

६. कया आप दूसरों के लिए मध्यस्थी और प्रार्थना करते हैं, ताकि वे दृढ़गढ़ों पर विजय प्राप्त करें ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

७. क्या आप दूसरों का मार्गदर्शन करते हैं ताकि वचन को जीने में सहनशक्ति का विकास करें और आत्मिक रूप से बढ़ सकें ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें ।

८. क्या आप दूसरों को स्तुति की मानसिकता के विकास के लिए मदद करते हैं जब वे जीवन की समस्याओं के साथ व्यवहार करते हैं ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू कर दें ।

९. क्या लोग आपके सहायता के बिना खड़े रहने के योग्य होते हैं जब आप उन्हें शिष्य बना लेते हैं ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो पता करे, क्यों और समस्या का सुधार इसी क्षण करें।

स्मरण करें : फिलिप्पियों ४:६

हमें पवित्र आत्मा के सामर्थ में चलना चाहिए ताकि हम शिष्य बनाएँ

.....

हमें पवित्र आत्मा के सामर्थ में चलना चाहिए ताकि हम शिष्य बनाएँ

बुनियादी शिष्यत्व
पाठ—३
व्यक्तिगत तैयारी

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए है उसके आधार पर प्रश्नों का उत्तर दें।

१. हमें दूसरों की सेवकाई से पहले स्वयं क्या करना चाहिए ? मत्ती ७:३—५

२. क्या होता अगर आप ऐसा नहीं करेंगे ? १ कुरि ९:२७

३. नीचे दिए गए आयतों के अनुसार, हमें वचन के साथ क्या करना चाहिए, ताकि हम दूसरों को शिष्य बनाने के लिए तैयार हो जाएँ ?
इफिसियों ३:४
२ तीमुथियुस २:१५
भजन संहिता
भजन संहिता ११९:११
रोमियों ६:१७—१८
यूहन्ना १:१—३
हबक्कूक २:२

४. नीचे दिए गए आयतों के अनुसार हमें किस तरह प्रार्थना करना चाहिए ताकि हम दूसरों को शिष्य बनाएँ ?
मत्ती २६:४१
१ तीमुथियुस २:१—४
मत्तती ६:९—१३

५. नीचे दिए गए आयतों के अनुसार आप किस प्रकार आत्मिक शस्त्र को पहनते हैं ? सच्चाई का कमरपटट्ा यूहन्ना १७:१७, २ यूहन्ना ४

धर्मिकता का कवच — रोमियों १०:९—१० : लूका १४:२६, २७, ३३: १ यूहन्ना २:२९

शांति के सुसमाचार प्रचार का जूता—रोमियों १०:१४—१५

विश्वास का ढाल — भजन संहिता ३३:२०—२१

उद्धार का टोप — फिलिप्पियों ४:८

आत्मा का तलवार इब्रानियों ४:१२, २ तीमुथियुस २:१५

प्रार्थना, छुटकारे का तीर इफिसियों ६:१८

६. पवित्र शास्त्र के अनुसार हमें दूसरों को शिष्य बनाने के लिए किस प्रकार की मानसिकता रखनी चाहिए ? १०:४३—४५, यूहन्ना १३:१४—१७

आधारभूत प्रश्न : जो आपने अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में मदद करना ।

१. क्या आप अपने निजी जीवन में समस्याओं के साथ व्यवहार कर रहे हैं, ताकि आप दूसरों की सेवकाई के लिए तैयार रहें ? हाँ..... नहीं ..... यदि नहीं, तो परमेश्वर से इसी क्षण मदद मांगे ।

२. क्या आप वचन के साथ जो करना चाहिए उसे करते हैं ताकि दूसरों को शिष्य बनाने के लिए तैयार हो जाएँ ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

३. क्या आपके पास एक प्रार्थना — सुची है, और क्या आप स्वयं के लिए प्रार्थना करते हैं जिस प्रकार पवित्र शास्त्र आपको कहता है करने के लिए ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें ।

४. क्या आपने अपना आत्मिक शस्त्र इस प्रकार रखा है जिस प्रकार पवित्र शास्त्र आपको करने कहता है ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

५. क्या आप एक सेवक की मानसिकता रखते हैं, आत्मिक मानसिकता के बावजूद जब आप दूसरों की सेवकाइ करते हैं ? हाँ..... नहीं..... .... यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे कि वह आपको एक सेवक का हृदय दें।

स्मरण करें: मरकुस १०:४४

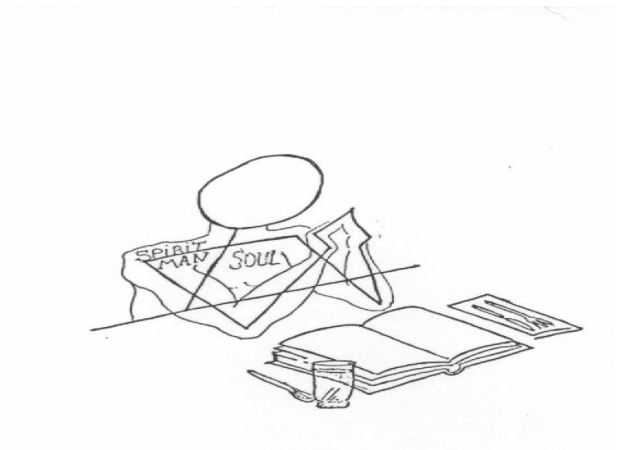

परमेश्वर हमें तैयार करेगा जैसे — जैसे हम दूसरों को शिष्य बनाते हैं और परमेश्वर के साथ समय बिताते हैं।

बुनियादी शिष्यत्व
पाठ—४
अनुवर्ती कार्रवाई

उद्देश्य : एक नए विश्वासी के मसीही जीवन को स्थापित करना ताकि वे मसीह के लिए जिएँ।

लक्ष : नए विश्वासी को इन बातों में स्थापित करना :

१. प्रतिदिन बाइबल अध्ययन
२. प्रतिदिन प्रार्थना
३. पानी का बपतिस्मा
४. पवित्र आत्मा से भरा जीवन
५. कलीसिया की संगति
६. उनके जीवन मं परमेश्वर की इच्छा को खोजना

कदम :

१. शुरूवात में अनुवर्ती कार्रवाई के लिए संपर्क बनाएँ। बुलाएँ या भेंट करें (२४ घंटो के अन्दर अगर संभव हो) नियत समय ठहराएँ
उदाहरण के लिए (जो दूसरों के लिए अनुवर्ती कार्रवाई कर रहे हों)
नमस्ते ! मैं———————————————— , ————————————————
कलीसिया से आता हूँ। मैं समझता हूँ कि———————————————— ने आपके लिए यीशु मसीह को स्वीकार करने के लिए प्रार्थना किया। हम चाहते है की मसीही जीवन का शुरूवात आपके जीवन में हो । इसलिए हम ———————— दिन को मिल सकते हैं।

२. बाइबल का अध्ययन शुरू करें । पहली भेंट में ''बुनियादी मसीही जीवन'' जो पहला पाठ हैं, करें।

३. उन्हें आमंत्रण दें या कलीसिया में लाएँ।

४. जहाँ तक संभव हो एक हफ्ते में दो बार संपर्क बनाए रखने की कोशिश करें जबतक वे पूरे रूप से स्थापित न हो जाएँ।

५. प्रतिदिन प्रार्थना के लिए, पानी का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा से भरा जीवन बिताने के लिए और उनके जीवन में परमेश्वर की इच्छा को खोजने के लिए उन्हें उत्साहित करें।

६. स्वयं को सलाह के लिए उपयोगी बनाएँ या किसी खास जरूरत के लिए सहयोग दें।

आधारभूत प्रश्न : जो आपने सीखा है उसमें मदद करने के लिए ।

क्या आप इस पाठ में दिए गए अनुवर्ती कार्रवाइ निर्देशतत्व का उपयोग कर रहे हैं ? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

स्वाभाविक रूप से लागू करना : जो निर्देशतत्व दिए गए हैं, उनके अनुसार आपने जिन लोगों को प्रभु में लाया है, उन्हें शिष्य बनाने की शुरूवात करना।

बुनियादी शिष्यत्व
पाठ—५
स्मरण रखने के लिए विशेष बातें

उद्देश्य : मत्ती २८:१८—२० बताता है कि हमारा काम शिष्य बनाना है (जो पूरे हृदय से यीशु मसीह के लिए जीते हैं) दूसरों को शिष्य बनाने के लिए आपको पहले एक शिष्य बनना है। सेवकाई और कलीसिया स्थापना में सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व की जरूरत है इस पाठयक्रम ने आपको दिखाया है कि शिष्यत्व क्या है और किस प्रकार एक नए धर्म परिवर्तक को शिष्य बनाना है।

नए धर्म — परिवर्तक को शिक्षा देना : जब एक नए धर्म परिवर्तक को शिष्य बनाते हैं तो आपको चार मूलभूत क्षेत्रों में जिस में नए नियम के लेखकों ने ध्यान केंद्रित किया उनपर स्वयं का ध्यान केंद्रित करना है।

क. व्यक्तिगत जीवन
ख. पारिवारिक जीवन
ग. कलीसिया जीवन
घ. सुसमाचार जीवन

एक नए धर्म — परिवर्तक को शिक्षा देने के लिए, उन्हें आयतों का अध्ययन करने दें और उनसे मूलभूत प्रश्न पूछें ताकि उन्होंने जो कुछ अध्ययन किया है, उनके जीवन में वह लागू करने में उनकी मदद करें।

शिष्य : याद रखें कि शिष्य एक ऐसा व्यक्ति है जिसका प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगति होता है, ताकि वे यीशु मसीह के लिए जिएँ ।

परमेश्वर के साथ प्रतिदिन संगति में निम्नलिखित बातों की जरूरत है :

क. वचन (जीवन की रोटी)

१. उसे पढ़ें — इफिसियों ३:४

२. उसका अध्ययन करें — २ तीमुथिसुस २:१५

३. उस पर मनन करें — भजन संहिता १

४. स्मरण करें — भजन संहिता ११९:११

५. उसे लिखें — हबक्कूक २:२

६. उसे जिएँ — रोमियों ६:१७—१८

७. उसे बाँटे — १ यूहन्ना १:१—३

ख. **प्रार्थना**

१. आपके लिए — मत्ती २६:४१

२. दूसरों के लिए — १ तीमुथियुस २:१

यीशु मसीह के लिए जीने में निम्नलिखित बातों की जरूरत है :

क. संगति — यूहन्ना १३:३५

ख. गवाही देना — मत्ती ५:१६

यदि हम शिष्य हैं तो हम आत्मिक रूप से भी बढ़ते हैं।

आत्मिक बढ़ोत्री के तीन स्तर है : १ यूहन्ना २:१२—१४

क. बच्चा

ख. जवान

ग. प्रौढ़

आत्मिक बढ़ोत्री में शामिल है :

क. दृढ़गढ़ों को तोडना और दुर्बलताओं पर विजय पाना ।
इफिसियों ४:१७ — ५:१६

ख. मसीह के मन की स्थापित करना । २ पतरस १:५ — १०

ग. हमारे जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों को जानना और उसे पूरा करना। २ तीमुथियुस १:९ और इफिसियों ५:१७

शिष्यत्व में शामिल है एक व्यक्ति को व्यक्तिगत दुर्बलताओं के दृढ़गढ़ों ओर सांस्कृतिक रीति—रिवाजों को तोडने में मदद करना, एक व्यक्ति को व्यक्तिगत जीवन के मूल बाइबल के सिद्धातों को सीखने में मदद करना, वचन और प्रार्थना की सेवकाई द्वारा पारिवारिक जीवन, कलीसिया जीवन, सुसमाचार फैलाना और एक व्यक्ति को सेवकाई के कार्य मे शिक्षा देना।

सेवकाई का कार्य करना यीशु मसीह की सेवकाई मे जारी रहना होता है। उसमें शामिल है :

क. प्रार्थना की सेवकाई

ख. वचन की सेवकाई

ग. जरूरतों की सेवकाई

परमेश्वर चाहता है कि हर समस्या में उसके लोग विजयी हों, उन्हें उसके कार्य मे उपयोगी ठहराएँ और अनन्तकाल तक उन्हें आशीष मिले।

गुरू (भाई या बहन जो आत्मिक रूप से बड़ा हो) :एक व्यक्ति जिस में क्षमता है कि वचन और प्रार्थना के द्वारा अपने जीवन में दृढ़गढ़ों को तोड़ सके और जो प्रतिदिन यीशु मसीह के लिए जीता हो।

शिष्य बनाने के व्यावाहारिक कदम :

क. नए विश्वासी की जानकारी लें (नाम, पता, वगैराह)
ख. बाइबल या नया नियम देकर उसके उपयोग को समझाएँ।
ग. जितना जल्दी हो सके पत्र या फोन द्वारा उनसे व्यक्तिगत रूप से संपर्क करें (२४ घंटो के भीतर)
घ. व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन, कलीसियाई जीवन और सुसमाचार के मूल अध्ययन को पढ़ें जितना जल्द हो सके।

मूल प्रश्न : जो विद्यार्थी ने सीख है उसे उसके अनुसार जीने में मदद करना।

१. क्या आप शिष्य है ? हाँ ..... नहीं ..... यदि नहीं, तो निर्णय कर लें कि आज से आप ऐसा बनेंगे।
२. क्या आपने अध्ययन कर प्रभु में बढ़ रहे हैं ,ताकि आप दूसरों को शिष्य बना सकें ? हाँ ..... नहीं ..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करें।
३. क्या आप दूसरों को शिष्य बनाने की खोज करते हैं जितना आपसे हो सके जो भी अध्ययन के निर्देशतत्व दिए गए हैं उनके द्वारा ? हाँ .... नहीं ..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

व्यावाहारिक रूप से लागू करना : विद्यार्थी को मदद करें कि वे जिन लोगों को प्रभु में लाएँ हैं, उन्हें दिए गए निर्देशतत्व द्वारा प्रभु में अगुवाई करें।

लोगों के जीवन के लिए परमेश्वर के पास एक अद्भुत उद्देश्य है। हम उन्हें मदद करना चाहतें हैं ताकि वे इसे ढूंढकर उस उद्देश्य को पूरा करें। यदि आप या किसी को आगे का प्रशिक्षण, प्रार्थना या इस बात की सूचना चाहिए कि किस प्रकार आप या दूसरे, यीशु मसीह के विषय में बांटना चाहते जहाँ कहीं आप कार्य करते हों या निवास करते हों तो कृपया हमसे संपर्क करों

BASIC INSTITUTE REQUEST FORM

यदि आप आगे का प्रशिक्षण अंग्रेजी में चाहते हैं, तो कृपया हमसे संपर्क करे।

NAME _____

ADDRESS _____

CITY_____ STATE_____ ZIP_____

COUNTRY_____

HOME PHONE _____

WORK PHONE _____

CELL PHONE _____

BEEPER _____

FAX _____

EMAIL _____

I would like to train in English.

Please send me the BASIC Institute Catalog.

I have a prayer request. (Please put on back)

Mail To:

BASIC Institute
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556 U.S.A.
Or
Phone (228) 255-9251 / Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
Web page www.basicministries.com

यदि आप इस अध्ययन से (आशिषित) हुए हैं तो किसी के साथ इसकी प्रतिलिपि को बाँटे।

प्रकाशक से सीधा प्राप्त । अंग्रेजी में लिखकर हमें अवश्य बतायें आप किस भाषा में चाहते हैं।

WRITE TO:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. BOX 431
KILN, MS 39556
U.S.A.

Phone (228) 255-9251

Fax (228) 255-8927

Copies are available by Email
Send your request to basic@basicministries.com
Or
Visit our web site
www.basicministries.com

COPIES ARE AVAILABLE IN OTHER LANGUAGES.
CONTACT US FOR MORE INFORMATION.

क्या आप जानना चाहते हैं कि इस संसार को बेहतर स्थान कैसा बनाया जाए ?

क्या आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य जाति को आखरी महान आज्ञा कौन — सी दी थी और उसे कैसे पूरा किया जाए ?

क्या आप , औरों को उनकी समस्याओं पर विजय पाने में , सहायता करना चाहते हैं ?

क्या आप जानना चाहते हैं कि औरों को कैसे सहायता की जाए, जिससे वे यीशु में एक स्थिर विजयपूर्ण जीवन जीये ?

क्या आप एक मित्र या प्रियजन से यह बाँटना चाहते हैं कि यीशु में किस प्रकार जीवन जीते हैं ?

।। तब तो यह पुस्तक आप ही के लिये है। ।।

भाई हेनरी पल्सीफर द्वारा संकलित

और

पॉला मिंगुची द्वारा चित्रित

आपको सफल और विजयी जीवन जीने में सहायता करने हेतू अध्ययन की श्रृंखला की यह प्रथम रचना है। भाई हेनरी ने ५० से अधिक वर्षो तक यीशु के लिये जीने से विजय का अनुभव किया है। साथ ही क्रूस के साथ चलने से उन्हे केंसर से भी चंगाई मिली है। चँगाई मिलने के बाद उन्हों ने संसार की यात्रा की, जिस में उन्होंने यीशु को बाँटा और औरों को सिखाया कि यीशु के लिये जीने से विजय और सफलता कैसे प्राप्त की जाती है , जिससे परमेश्वर का उद्देश्य उनके जीवन में कैसे पूरा होता है।

अपने इन अनुभवों पर आधारित लेखों का संकलन उन्होंने किया है, जिससे पवित्र शास्त्र के मूल सिध्दांतो को लोगों को समझने में और उनके मुताबिक जीवन जीने में सहायता हो, जिससे (लोगोंको) उन्हे एक सफलतापूर्ण, विजयी जीवन प्राप्त हो। इस विशेष अध्ययन की रचना , पारिवारिक जीवन के लिये, परमेश्वर के सिध्दांतो को समझने में सहायता करने के लिये की गयी है। इस से आपके निजी जीवन में भी , (परमेश्वर का) (धार्मिक) व्यक्ति बनने में और प्रत्येक दिन यीशु के लिये जीने से आप को सफलता और विजय की प्राप्ति होगी। इस के उपयोग से आप औरों को पारिवारिक जीवन के बारे में सीखा सकेंगे और, व्यक्तिगत और सामुदायिक अध्ययन के लिये भी कर पायेंगे।

प्रतिलिप्यधिकार १९९० सर्व हक सुरक्षित

इस अध्ययन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक की अनुमति के बिना छापना नहीं है।
अतिरिक्त , कुछ हिस्से छापने के बाद मुफ्त में बाँटे जाए।
मूल स्त्रोत को उचित प्रमाण देना आवश्यक है।

PUBLISHED BY:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556
USA

Phone (228) 255-9251
Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
On the web at www.basicministries.com